महिला वैज्ञानिक

पहचान के लिए संघर्ष

जेफरी टॉमस

फोटो © ऐ.पी.-डब्ल्यूडब्ल्यूपी

मा इक्रोइलेक्ट्रोड का आविष्कार करके न्यूरोफिज़ियोलॉजी के क्षेत्र में क्रांति ला देने वाली इडा हेनरिएट्टा हाइड को स्नातकोत्तर अध्ययन के सिलसिले में विश्वविद्यालयों की ''स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध'' नीति का सामना करना पड़ा लेकिन फिर भी 1896 में वह जर्मनी के हीडलबर्ग विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि पाने वाली पहली अमेरिकी स्त्री बनीं।

अपने संस्मरण *बिफोर विमेन वर ह्यूमन बीइंग्स* में उन्होंने लिखा है कि शुरू में उनके शैक्षणिक परामर्शदाता उनकी महत्वाकांक्षा पर हंसे थे लेकिन उन्होंने एक ऐसी राह बनाई जिस पर जर्मन स्त्रियां चल निकलीं, उन्होंने स्त्रियों को उच्च शिक्षा में प्रवेश न देने की अमेरिकी विश्वविद्यालयों की नीति की खामियां उजागर कर दीं।

1947 में विज्ञान का नोबेल पुरस्कार पाने वाली पहली अमेरिकी स्त्री गर्टी कोरी के नक्शेकदम पर चलते अमेरिकी स्त्रियां ऐसे पुरस्कार और सम्मान की सूची में जगह पाने लगीं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में अपने बढ़ते योगदान के अनुपात में स्त्रियों को आज भी कम ही पुरस्कार, सम्मान, अनुदान मिल पाते हैं। इसे देखते हुए वाशिंगटन,डी.सी. स्थित सोसायटी फ़ॉर विमेन्स हेल्थ रिसर्च के सहयोग से कुछ व्यावसायिकों ने नामांकन प्रक्रिया की शुरुआत में ही इसमें हस्तक्षेप करके इस खामी को दूर करने की ठानी है।

रेज़ (रिकॉग्निशन ऑफ़ द अचीवमेंट्स ऑफ़ विमेन इन साइंस, इंजीनियरिंग, मैथमेटिक्स एंड मेडिसिन) परियोजना ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में स्त्रियों पर लागू होने वाली अदृश्य बाधक सीमाओं का दस्तावेजीकरण किया है और 1000 से अधिक पुरस्कारों, अनुदानों और सम्मानों के लिए नामांकन प्रक्रिया का एक सुलभ आंकड़ाकोष तैयार किया है।

परियोजना के विचार का बीज कई वर्ष पहले विज्ञान और उससे जुड़े क्षेत्रों में काम करने वाली स्त्रियों की मासिक बैठक में तब पड़ा जब चर्चा के दौरान उन्होंने पाया कि उस वर्ष के नेशनल मेडल ऑफ़ साइन्स प्राप्त करने वालों की सूची में एक भी स्त्री का नाम नहीं है।

उस शाम को याद करते हुए रेज़ प्रोजेक्ट का निर्देशन कर रही यूनिवर्सिटी ऑफ़ बफ़ैलो, न्यू यॉर्क के त्वचा शास्त्र विभाग की भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. स्टेफनी पिंकस कहती हैं, ''पुरस्कार शैक्षणिक जगत और उद्योग को लेकर संतुष्टि का भाव पैदा करते हैं। यह स्त्रियों की उपलब्धियों की पहचान के महत्वपूर्ण पक्ष हैं।''

वह बताती हैं कि हमने एक ही प्रश्न पर ध्यान केंद्रित किया: ''हम इस बारे में क्या करेंगे?'' पेशे से चिकित्सक और व्यवसाय में स्नातकोत्तर उपाधिधारी पिंकस याद करती हैं, ''तो हमने सोचा कि (स्त्रियों के) नामांकनों की संख्या बढ़ाई जाए, क्योंकि अगर नामांकन ही नहीं होगा तो पुरस्कार कहां से मिलेगा?'' उन्होंने उपलब्ध पुरस्कारों, अनुदानों और सम्मानों के लिए अपने क्षेत्रों की अग्रणी स्त्रियों को नामांकित करने के लिए जो उपाय अपनाए, वे कारगर नहीं रहे। इसलिए उन्होंने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ हेल्थ की स्त्री रोग और प्रसवविज्ञानी डॉ. फ्लोरेंस हेजल्टीन की सहायता लेकर एक इन्टरएक्टिव वेबसाइट तैयार करने का फैसला लिया। ''हमारा लक्ष्य सूचना उपलब्ध करवाना था। इसके साथ ही हमने नामांकन की प्रक्रिया की तैयारी के बारे में भी काफी जानकारी उपलब्ध करवाई है ताकि अधिकारिक नामांकन संभव हो सकें।''

यू.एस. नेशनल साइंस फाउंडेशन से प्राप्त नवीनतम आंकड़ों के अनुसार विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में विश्वविद्यालयी अध्यापकों और शोध परामर्शदाताओं में से लगभग 33 प्रतिशत स्त्रियां हैं।

1981 के बाद विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में दिए गए पुरस्कारों, अनुदानों और सम्मानों में से 17 प्रतिशत स्त्रियों को मिले हैं और इनमें से लगभग 33 प्रतिशत केवल स्त्रियों को दिए जाने वाले पुरस्कार, अनुदान और सम्मान थे। रेज़ परियोजना द्वारा सूचीबद्ध किए गए 1000 से भी अधिक पुरस्कारों, अनुदानों और सम्मानों में से एक तिहाई ऐसे हैं जिनके प्राप्तकर्ताओं में स्त्रियों की भागीदारी एक प्रतिशत भी नहीं है।

चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में विलक्षण योगदान के लिए दिया जाने वाला फ्लेक्सनर अवार्ड, कैंसर शोध में आजीवन गणितीय उपलब्धि के लिए अमेरिकन असोसिएशन फ़ॉर कैंसर रिसर्च अवार्ड, विशिष्ट गणितीय उपलिब्ध और सम्भाव्यता के लिए दिया जाने वाला फ़ील्ड्स मेडल अब तक किसी स्त्री को न मिलने वाले कुछ महत्वपूर्ण पुरस्कार हैं। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार लैस्कर अवार्ड प्राप्त करने वालों में स्त्रियों की भागीदारी कुल 8.3 प्रतिशत है।

ऊपर: गर्टी कोरी और उनके पति कार्ल कोरी सेंट लुई, मिज़ूरी में वाशिंगटन यूनिवर्सिटी की प्रयोगशाला में।

दाएं: कंप्यूटर प्रोगामिंग में अग्रणी ग्रेस हॉपर।

लेकिन पिंकस निराश नहीं हैं, ''मुझे पूरा विश्वास है कि स्थिति सुधरेगी।'' वह कहती हैं, ''हम पुरस्कारों, अनुदानों और सम्मानों की प्रक्रियाओं और संगठनों में पारदर्शिता लाने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। हमने दिखाया है कि पुरस्कार समिति की सरंचना का सीधा असर पुरस्कार, अनुदान और सम्मान प्राप्त करने वालों के लिंगानुपात में दिखता है।''

वह उन शोधों का उल्लेख करती हैं जो इंगित करते हैं कि संस्कृति नामांकन और अनुमोदन (के लिए लिखे जाने वाले) पत्र प्रभावित करती है, ''यह सिर्फ पुरुषों द्वारा स्त्रियों के नज़रन्दाज़ करने की बात नहीं है; खुद स्त्रियां भी अपने काम, अपनी उपलिब्धयों के बारे में उस मजबूती से नहीं लिखतीं जिस मजबूती से पुरुष लिखते हैं। असल में स्त्रियों को लगता है कि ऐसा करना स्त्रियोचित नहीं है। हमें इसी मुद्दे पर ध्यान देना है।

दिलचस्प बात यह है कि वैज्ञानिक संगठन हमारी बात से सहमत हो रहे हैं। हम अमेरिकन असोसिएशन ऑफ़ विमेन साइंस के सहयोग से संगठनात्मक बदलाव पर काम कर रहे हैं। इस मुद्दे पर सोचते तो बहुत लोग थे लेकिन आंकड़े किसी के पास नहीं थे, इसलिए हल भी नहीं निकल रहा था। अब हमने राह दिखाई है तो लोग समस्या और उसके हल की ज़रूरत को मान रहे हैं।''

ज़्यादा जानकारी के लिए:

रेज प्रोजेक्ट

http://www.raiseproject.org/

एसोसिएशन फ़ॉर विमेन इन साइंस

http://www.awis.org/

जेफरी टॉमस *America.gov के कार्यालय लेखक हैं।*